12

दुष्ट लोगों को मिलने वाला दण्ड

''पर अपनी कठोरता और हठीले मन के अनुसार उसके क्रोध के दिन के लिए, जिस में परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपने निमित्त क्रोध कमा रहा है। वह हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला देगा। जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में हैं, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा। पर जो विवादी हैं, और सत्य को नहीं मानते, वरन अधर्म को मानते हैं, उन पर क्रोध और कोप पड़ेगा। और क्लेश और संकट हर एक मनुष्य के प्राण पर जो बुरा करता है, आएगा, ...'' (रोमियों 2:5-9)।

हम यह तो चाहते हैं कि जीवन का आनन्द कभी भी खत्म न हो, परन्तु यह भी चाहते हैं कि पीड़ा जल्दी से खत्म हो जाए। दण्ड न पाना कितना आनन्ददायक और सुखद है। गलतियों का बदला हमें केवल उन बातों को सहकर ही मिलेगा जो हमें माननीय नहीं हैं। यदि लगता है कि परमेश्वर द्वारा अपनी बात पूरा करना दुखदायक है, तो ऐसी ही उम्मीद होनी चाहिए। परमेश्वर पापी मनुष्य को दण्ड दिए बिना कैसे रह सकता है?

दण्ड कैसा होगा?

जैसा कि हमने पहले ही निष्कर्ष निकाला है, बाइबल सिखाती है कि समय के अन्त में दुष्टों को सदा के लिए दण्ड दिया जाएगा। हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि वह ''अनन्त दण्ड'' कैसा होगा (मत्ती 25:46)।

अस्तित्व मिट जाएगा?

कुछ लोगों की शिक्षा है कि दण्ड सदा के लिए नहीं होगा। उनका मानना है कि ''अनन्त दण्ड'' का अर्थ है कि आज्ञा न मानने वालों का खात्मा हो जाएगा। अस्तित्व का मिट जाना ही अनन्तकाल के लिए मिलने वाला दण्ड है। वे इस शिक्षा का आधार उन वचनों को बनाते हैं, जिनमें कहा गया है कि दुष्ट लोग नष्ट हो जाएंगे या अनन्त विनाश भोगेंगे (मत्ती 10:28)।

यूनानी शब्द *apollumi* जिसका अनुवाद ''नष्ट'' (मत्ती 10:28; मरकुस 8:25) और

''खोया'' (लूका 15:4, 6) हुआ है। मत्ती 9:17 में यीशु ने जिन मश्कों का संकेत दिया, वे खराब हो जानी थीं परन्तु नष्ट नहीं होनी थीं; और भेड़, सिक्का, और पुत्र जो खो गए, (*अपोलुमी*) मिल गए थे (लूका 15:6, 9, 24)। यीशु ''खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया'' (लूका 19:10) और उसने प्रतिज्ञा की कि ''जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे पाएगा'' (मत्ती 10:39)। जो खत्म हो गया हो वह मिल नहीं सकता या वह बचाया नहीं जा सकता। हर संक्षिप्त संदर्भ में, *अपोलुमी* का अर्थ ''खोना,'' ''बर्बाद होना,'' ''नष्ट होना,'' ''विनाश होना,'' है परन्तु ''खत्म होना'' नहीं हो सकता।

दुष्ट लोग बिना खत्म हुए अनन्तकाल के लिए दण्ड सहते रहेंगे: ''उनकी पीड़ा का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा, ... उनको रात-दिन चैन न मिलेगा'' (प्रकाशितवाक्य 14:11)। शैतान, अर्थात उस पशु और झूठे भविष्यवक्ता के दण्ड का जिसे प्रकाशितवाक्य 19:20 में पहले आग की झील में डाला गया था, प्रकाशितवाक्य 20:10 में वही चित्रण दिया गया है। यदि आग की झील से इसमें फैंके गए लोगों को प्रभु का अस्तित्व खत्म हो जाता है, तो पशु और झूठा भविष्यवक्ता जिन्हें पहले आग की झील में फैंका गया था, शैतान के एक हज़ार से अधिक वर्ष पहले आग में डाले जाने से भस्म हो जाने चाहिए थे (प्रकाशितवाक्य 20:2, 3)। वे अभी भी आग की झील में थे और ''रात-दिन युगानुयुग'' वहीं तड़पते रहेंगे (प्रकाशितवाक्य 20:10)।

नई वाचा के अधीन परमेश्वर के अनुग्रह को ठुकराने वाले लोग मूसा की व्यवस्था का उल्लंघन करने वाले इस्राएलियों से अधिक दण्ड के योग्य माने जाएंगे (इब्रानियों 10:29)। मूसा की व्यवस्था का उल्लंघन करने वालों का सबसे बड़ा दण्ड मृत्यु दण्ड था, जिस कारण मृत्यु से भी भयंकर दण्ड होना आवश्यक है और वह दण्ड नरक है।

वास्तविक दण्ड?

नरक (यू.: *gehenna*[1]) यीशु द्वारा विशेष रूप से उचरित वास्तविक जगह है (देखें मत्ती 5:22, 29, 30; 10:28; 18:9; 23:15, 33; मरकुस 9:43, 45, 47; लूका 12:5; याकूब 3:6), जिसका याकूब 3:6 में एक और जगह वर्णन है। *Hades* (हेडिस) और *gehenna* (गेहन्ना) का अनुवाद ''नरक'' करके KJV ने काफ़ी उलझन पैदा कर दी है। मृतकों के लिए मध्य स्थिति हेडिस तथा दुष्टों को दिए जाने वाले स्थान नरक में स्पष्ट अन्तर देखा जाना आवश्यक है।

गेहन्ना शब्द का पहला इस्तेमाल यरूशलेम के दक्षिण में एक गहरी घाटी के लिए किया जाता था, जो हिन्नोन के पुत्रों की थी। मूर्तिपूजकों द्वारा अपने बच्चों को यहां जलाने के कारण यह स्थान परमेश्वर और मनुष्यों की दृष्टि में घृणा के योग्य बन गया था (देखें 2 राजा 23:10; देखें 2 इतिहास 28:3; 33:6; यिर्मयाह 7:31, 32; 19:6)। इस कारण यीशु के समय में यह यरूशलेम के कूड़ा फैंकने का स्थान बन गया था। यह सदा कीड़ों से भरा रहता था और आग के कारण इसमें से लगातार दुर्गंध और धुआं निकलता रहता था। *गेहन्ना* शब्द का यीशु द्वारा इस्तेमाल दुष्टों को दिए जाने वाले स्थान का उपयुक्त विवरण था।

यीशु ने गेहन्ना की आग का संकेत धधकती आग के रूप में दिया (मत्ती 13:42, 50)। यह आग सदा तक रहने वाली है जो कभी बुझ नहीं सकती (मत्ती 3:12; 18:8; 25:41; मरकुस 9:48; देखें मरकुस 9:43; लूका 3:17)। उसने यह भी कहा कि ''कीड़ा'' नहीं मरेगा। यदि आग और कीड़े लाशों को खत्म कर दें, तो कुछ और खाना न मिलने के कारण आग बुझ जाएगी और कीड़े मर जाएंगे। बेशक यीशु ने आग और कीड़ों को इनके शाब्दिक अर्थों में समझाने की इच्छा नहीं की थी, परन्तु उसने इन शब्दों का इस्तेमाल दण्ड की न खत्म होने वाली प्रकृति का संकेत देने के लिए किया।

यदि आग भौतिक आग नहीं है, तो यीशु ने बार-बार ''आग'' शब्द का इस्तेमाल क्यों किया? दूसरी ओर, वह हमें सांसारिक अर्थों के अलावा प्राणों को मिलने वाले दण्ड की बात और कैसे समझा सकता था? शायद स्वर्ग की सुन्दरता को दिखाने के लिए इसी प्रकार सांसारिक शब्दों का इस्तेमाल किया गया। यीशु ने नरक की भयावहता को समझने में हमारी सहायता करने के लिए सांसारिक शब्दों का इस्तेमाल किया होगा।

नरक में कैसा दण्ड दिया जाएगा? आज्ञा न मानने वाले लोग कैसे दण्ड की उम्मीद कर सकते हैं?

(1) नरक में भेजे जाने वाले लोगों को ''दूर'' हो जाने के लिए कहा जाएगा (मत्ती 7:23; देखें 25:41; लूका 13:27)। उन्हें परमेश्वर से दूर किया जाएगा।

(2) नरक में लोगों को परमेश्वर की उपस्थिति से दूर दण्ड मिलेगा (2 थिस्सलुनीकियों 1:9)। इससे यह संकेत मिल सकता है कि परमेश्वर उन्हें देखेगा नहीं, उनकी सुनेगा नहीं या उनकी सहायता नहीं करेगा।

(3) शैतान और उसके दूतों के साथ-साथ हर दुष्ट व्यक्ति जो कभी रहा होगा, नरक में डाला जाएगा (मत्ती 25:41)।

(4) नरक आग और गंधक की पीड़ा का स्थान है (प्रकाशितवाक्य 14:10; देखें 20:10; 21:8)।

(5) नरक में जाने वाले लोग सदा-सदा के लिए निरन्तर नष्ट होते रहेंगे (2 थिस्सलुनीकियों 1:9)।

(6) उन्हें परमेश्वर के अनन्त राज्य में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी जाएगी (1 कुरिन्थियों 6:9; गलातियों 5:21)।

(7) वे परमेश्वर के क्रोध को सहेंगे (मत्ती 3:7; देखें रोमियों 2:5; 5:9; इफिसियों 5:6; कुलुस्सियों 3:6)। यह क्रोध बिना मिलावट के डाला जाएगा (प्रकाशितवाक्य 14:10)।

(8) वे बाहर, घोर अंधकार में रहेंगे (मत्ती 8:12; देखें 22:13; 25:30; 2 पतरस 2:17; यहूदा 13)।

(9) वे दण्ड पाएंगे (मरकुस 16:16; यूहन्ना 5:29; 2 थिस्सलुनीकियों 2:12; 2 पतरस 2:3)।

(10) वे सड़ने की स्थिति में होंगे (गलातियों 6:8)।

(11) उन्हें परमेश्वर की ओर से बदला मिलेगा (रोमियों 12:19)।

दण्ड पाने वालों की प्रतिक्रिया व्याख्या से बाहर होगी: वे पीड़ा और निराशा में होंगे (रोमियों 2:9)। यीशु ने कहा कि वे रो रहे और दांत पीस रहे होंगे, जो गहरी पीड़ा का संकेत है (मत्ती 8:12; 13:42, 50; 22:13; 24:51; 25:30; लूका 13:28)।

नरक के बारे में जो कुछ भी कहा गया है वह भयानक ढंग से बुरा है; उसके बारे में कुछ भी अच्छा नहीं कहा गया। जो लोग वहां जाते हैं, वे हर उस दुष्ट के साथ सदा के लिए रहेंगे, जो कभी जीवित रहा, उसके अलावा शैतान और उसके दूत भी उनके साथ होंगे (मत्ती 25:41)! वे कभी भी परमेश्वर या धर्मी लोगों के साथ नहीं रहेंगे। वे सदा के लिए अंधकार में रहेंगे। परमेश्वर जो प्रकाश है, वहां नहीं होगा। सूर्य, आकाशगंगाएं, तारे और संसार की कोई रोशनी वहां नहीं होगी। बिना परमेश्वर की रोशनी के, केवल अंधकार ही है।

क्या दण्ड के स्तर होंगे?

परमेश्वर का दण्ड बहुत कड़ा होगा, जिस कारण हम पूछ सकते हैं, ''क्या दण्ड के अलग-अलग स्तर होंगे?'' क्या परमेश्वर ''भला जीवन'' व्यतीत करने वाले व्यक्ति को जिसने सुसमाचार को ठुकराया वैसा ही दण्ड देगा जैसा किसी अनैतिक हत्यारे को दिया जाएगा? क्या परमेश्वर ऐसा करके न्याय करेगा? मानवीय तर्क पुकारकर कह सकता है, ''नहीं!'' परन्तु इससे यह साबित नहीं होता कि परमेश्वर कैसे कार्य करेगा।

कुछ शास्त्रों से यह संकेत मिलता है कि दण्ड के स्तर होंगे। पशु की पूजा करने वालों की बात कि ''वह परमेश्वर के प्रकोप की निरी मदिरा जो उसके क्रोध के कटोरे में डाली गई है, पीएगा'' (प्रकाशितवाक्य 14:10) से संकेत मिलता है कि सब लोग परमेश्वर के क्रोध की पूरी सामर्थ नहीं पीएंगे। इस आयत में केवल उन्हीं के बारे में, जिन्होंने पशु की पूजा की, कहा गया है कि वे परमेश्वर के क्रोध को पीएंगे।

यहूदियों के कपटी धार्मिक अगुओं के विषय में, यीशु ने कहा कि ''वे विधवाओं के घरों को खा जाते हैं, और दिखाने के लिए बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हैं, ये अधिक दण्ड पाएंगे?'' (मरकुस 12:40; मत्ती 23:14; लूका 20:47 भी देखें)। यदि ''अधिक दण्ड'' का अर्थ कठोर दण्ड नहीं है, तो फिर और क्या है?

लूका 12 अध्याय वाले दृष्टांत में, यीशु ने एक स्वामी के बारे में बताया, जिसने अपने दास को साथी दास को पीटते और शराबी हालत में पाया। यह ध्यान दिलाने के बाद कि इस दास को अविश्वासियों के साथ रखा जाएगा, उसने आगे कहा:

> और वह दास जो अपने स्वामी की इच्छा जानता था, और तैयार न रहा और न उस की इच्छा के अनुसार चला, बहुत मार खाएगा। परन्तु जो नहीं जानकर मार खाने के योग्य काम करे वह थोड़ी मार खाएगा, इसलिए जिसे बहुत दिया गया है, उस से बहुत मांगा जाएगा, और जिसे बहुत सौंपा गया है, उस से बहुत मांगेंगे (आयतें 47, 48)।

इन आयतों में, यीशु दण्ड के स्तर बता रहा था। क्या इस शिक्षा को नरक में मिलने वाले अनन्त दण्ड के लिए लागू किया जाना चाहिए? यदि हां तो दण्ड के स्तर अवश्य होंगे।

नरक में कौन जाएगा?

हमें बताया गया है कि दण्ड किन्हें मिलेगा। पौलुस ने उनका वर्णन हठी और मन न फिराने वाले लोगों के रूप में किया, जो ''विवादी हैं और सत्य को नहीं मानते, वरन अधर्म को मानते हैं'' और बुराई करते हैं (रोमियों 2:5, 8, 9)। उसने यह भी लिखा कि उनमें वे लोग भी शामिल हैं, जो ''परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते'' (2 थिस्सलुनीकियों 1:8)। पौलुस ने उन लोगों की सूची दी जो स्वर्ग में नहीं जाएंगे, जिसका अर्थ यह है कि वे नरक में जाएंगे (1 कुरिन्थियों 6:9; देखें गलातियों 5:21; इफिसियों 5:5)। जिस प्रकार का जीवन उन्होंने जिया, उसके कारण नरक ही उनका अनन्त निवास होगा।

आश्चर्य की बात नहीं कि नया नियम भय की बात करता है। पौलुस ने लिखा है, ''सो प्रभु का भय मानकर हम लोगों को समझाते हैं'' (2 कुरिन्थियों 5:11)। इसी लहजे में, पतरस ने लिखा, ''और जब कि तुम, हे पिता, कहकर उससे प्रार्थना करते हो, जो बिना पक्षपात हर एक के काम के अनुसार न्याय करता है, तो अपने परदेशी होने का समय भय से बिताओ'' (1 पतरस 1:17)। यीशु ने कहा, ''जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना; पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नष्ट कर सकता है।'' पौलुस ने भी लिखा है, ''सो हे मेरे प्यारो, जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो, वैसे ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए पर विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर भी डरते और कांपते हुए अपने-अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ'' (फिलिप्पियों 2:12)।

''सिद्ध[2] प्रेम भय को दूर कर देता है'' (1 यूहन्ना 4:18), और सिद्ध प्रेम हमें आज्ञा मानने वाले बनाए रखता है (यूहन्ना 14:15, 21; 1 यूहन्ना 5:3)। हमें परमेश्वर का प्रेम और भय दोनों अपने अन्दर बढ़ाने आवश्यक हैं। परमेश्वर के लिए हमारा प्रेम उसकी सेवा के लिए हमें उसके निकट लाने वाला होना चाहिए और परमेश्वर के भय से हम उसकी इच्छा पूरी करने के लिए उसका आदर करने वाले हों (1 पतरस 1:17)।

सारांश

ऊपर जो कुछ कहा गया है, वह हमें यह विश्वास दिलाने के लिए काफ़ी होना चाहिए कि हम नरक में नहीं जाना चाहते। नरक हमारे लिए नहीं, बल्कि शैतान और उसके दूतों के लिए बनाया गया था। उस मुश्किल के कारण जो उसने संसार के इतिहास में डाली है, शैतान सदा-सदा के लिए उस तपते नरक में डाले जाने के योग्य है जो परमेश्वर बना सकता है। परन्तु यदि हम यह करते हैं, तो हमें इस बात का अहसास होना चाहिए कि जो लोग परमेश्वर की बात न मानकर शैतान के पीछे चलते हैं, उन्हें केवल बातों के लिए डांट लगाना ही काफ़ी नहीं है।

हमारा सबसे बड़ा लक्ष्य स्वर्ग में पहुंचना और नरक के दण्ड से बचना होना चाहिए। स्वर्ग की तुच्छ से तुच्छ जगह, यदि स्वर्ग में कोई तुच्छ जगह है, नरक की सुन्दर से सुन्दर

जगह में, यदि वहां कोई सुन्दर जगह है, सदा तक रहने की इच्छा करने से बेहतर है। हम अपने जीवनों को परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बिताकर और दूसरों को स्वर्ग में जाने के लिए तैयारी करवाकर नरक के आतंक से बच सकते हैं।

टिप्पणियां

[1] *गेहन्ना* एक इब्रानी शब्द का जो *ge* जिसका अर्थ ''घाटी'' और *Hinnom* जिसका अर्थ घाटी का स्वामी है, का यूनानी लिप्यंतरण है। [2] अनुवादित शब्द ''सर्वसिद्ध'' का यूनानी शब्द *telios* है जिसका अर्थ ''पूर्ण रूप से विकसित'' है।